भारतीय हिंदी प्राध्यापक परिषद

(स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिन्दी शिक्षकों का अखिल भारतीय संगठन)

E-mail: bhindipp@gmail.com, hindipradhyapak@gmail.com,
Website: hindipradhyapak.org

भारतीय हिन्दी प्राध्यापक परिषद की 'क्षमता संवर्धन कार्यशाला' के अंतर्गत प्रथम व्याख्यान का प्रतिवेदन

भारतीय हिन्दी प्राध्यापक परिषद की 'क्षमता संवर्धन कार्यशाला' के तहत पहला व्याख्यान रविवार 12 मई,2024 को सम्पन्न हुआ। अलीगढ़ मुस्लिम विवि के प्रो. शंभुनाथ तिवारी ने 'हिन्दी भाषा एवं साहित्य में शोध - अनुसंधान की नवीन संभावनाएं' विषय पर ऑनलाइन वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के आरंभ में संचालन कर रहीं डॉ. आशा सिंह यादव ने भारतीय हिंदी प्राध्यापक परिषद के उद्देश्यों को स्पष्ट किया तथा प्रो. शंभुनाथ तिवारी जी का औपचारिक तौर पर स्वागत किया। प्रो. शंभुनाथ तिवारी जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि शोध की प्रक्रिया में शोधार्थी एवं पर्यवेक्षक लंबे समय तक एक विषय से जुड़ते हैं और उसकी परिणति तक पहुँचते हैं। विशाल हिंदी के सागर से एक शोध विषय को चुनकर उस पर व्यवस्थित एवं ग़ंभीर कार्य करना श्रमसाध्य है। आज के परिदृश्य में जब विधार्थी शोध की तरफ अग्रसर होता है तो विषय चयन करते समय कुछ लोकप्रिय विधाओं विशेषकर कथा साहित्य तक सिमट कर रह जाता है । आज भाषाविज्ञान, काव्यशास्त्र, शैली विज्ञान आदि को लेकर कम शोध होते हैं जबकि पूर्व के विद्वानों ने इन विषयों पर खूब कार्य किया था। हिंदी के शोध ग्रंथों के लेकर विदेशी विद्वानों के टिप्पणियां दो मूलभूत कमियों की तरफ इशारा करती हैं- (1) पूर्व के कार्यों का उल्लेख नहीं करना (2) हाइपोथिसिस पर ध्यान नहीं देना। जबकि इन दो कार्यों के अभाव में शोध अधूरा होता है। हाइपोथीसिस मकान के नक्शे की भाँति है, यह शोध की दिशा एवं परिणति तय करती है।

प्रो. शंभुनाथ तिवारी ने अपने व्याख्यान में हिंदी में शोध के कई महत्त्वपूर्ण दिशाओं की तरफ संकेत किया। उनके अनुसार आदिकाल में स्वयंभू द्वारा रचित रामकाव्य ' पउमचरिऊ' एवं परवर्ती रामकथा को लेकर तुलनात्मक रुप से कार्य किया जाए तो कुछ नवीन निष्कर्ष निकल सकते हैं। इसी तरह चर्यगीत, जयदेव का गीत गोविंद, विद्यापति के पद एवं आधुनिक हिंदी नवगीत किस तरह एक दूसरे से जुड़ते हैं, इस पर भी व्यस्थित कार्य किया जा सकता है। कबीर एवं मीराबाई को अन्य भारतीय भाषाओं के संतों एवं अंतराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है, इससे अवश्य ही नवीन निष्कर्ष प्राप्त होंगे। आज के समय में रीतिकाल को आधुनिक दृष्टि से देखने की जरुरत है।रीतिकालीन कविता एवं उर्दू कविता में पर्याप्त समानता है, यदि इनका तुलनात्मक अध्ययन हो तो निश्चय ही महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होंगे। हिंदी में भारतेंदु हरिश्चंद् आधुनिक साहित्य के निर्माता माने जाते हैं। शोध के लिए उर्दू, तेलगु, उड़िया, बांग्ला, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं में आधुनिकता का प्रवर्तक करने वाले रचनाकरों के साथ भारतेंदु की तुलना की जा सकती है। इसी तरह प्रेमचंद को भारत एवं दुनिया की तमाम भाषाओं में किसान जीवन पर लिखने वाले रचनाकारों के साथ रख कर देखा जा सकता है। संस्कृत की तमाम क्लासिक रचनाओं से आधुनिक कवि पोषण प्राप्त करते हैं। इस प्रभाव को भी शोध का विषय बनाया जा सकता है। व्याख्यान के पश्चात प्रश्नोत्तर का दौर चला जिसमें प्रो तिवारी ने श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. आशुतोष तिवारी ने प्रो. शंभुनाथ तिवारी जी को सारगर्भित एवं महत्त्वपूर्ण व्याख्यान देने के लिए आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों ने प्रतिभाग किया।

प्रतिवेदन प्रस्तुति : डॉ आशुतोष तिवारी